mercredi 29 février 2012

HIN1B08b

(Compréhension de l'écrit)

Cours – 4

सच्चा सुनार : भोजपुरी लोककथा

बात बहुत पुरानी है, वही आज कहानी है । एक गाँव में एक सुनार रहता था । वह सुनारी (गहने बनाने और बेचने का काम) करता था । उसके चार बेटे थे । एक दिन सुनार ने अपने चारों बेटों को बुलाया और पूछा, "तुम सबको मालूम है, सच्चे सुनार की परिभाषा ?" बड़े बेटे ने कहा, "जो बचाए रुपए में से चार आने, हम सच्चा सुनार उसी को मानें। "मँझले ने कहा, "सच्चा सुनार वह है जो पचास पैसे खुद की जेब में डाले और पचास ही पाएँ ग्राहक महाशय।" सँझले ने कहा, "बिल्कुल नहीं ! सच्चा सुनार वही जिसका सपना यही - रुपये में बारह आना अपना ।" अब बारी थी छोटे की, उसने कही बात पते की, "रुपये का रुपया भी ले लो और ग्राहक को खुश भी कर दो।"

सुनार और उसके बेटों की बातें एक अमीर महाशय सुन रहे थे । उन्होंने सुनार के छोटे बेटे की परीक्षा लेनी चाही । एक दिन अमीर महाशय ने सुनार के छोटे बेटे को अपने घर पर बुलाया और कहा, "मुझे सोने का एक हाथी बनवाना है लेकिन मैं चाहता हूँ कि वह हाथी तुम मेरे घर पर बनाओ ।"

अमीर महाशय की बात सुनार के छोटे बेटे ने स्वीकार कर ली । वह प्रतिदिन अमीर महाशय के घर पर आने लगा और अमीर महाशय की देख-रेख में हाथी का एक-एक भाग बनाने लगा । शाम को जब सुनार का छोटा लड़का अपने घर पर पहुँचता था तो वहाँ भी पीतल से एक हाथी का एक-एक भाग बनाता था ।

एक हफ्ते में अमीर महाशय के घर हाथी बनकर तैयार हो गया । सुनार के छोटे बेटे ने अमीर महाशय से कहा, "महाराज, थोड़ा दही मँगाइए, क्योंकि दही लगाने से इस हाथी में और चमक आ जाएगी ।" अभी अमीर महाशय दही की व्यवस्था कराने की सोच ही रहे थे तभी घर के बाहर किसी ग्वालिन की आवाज सुनाई दी, "दही ले लो दही ।" अमीर महाशय ने उस ग्वालिन को बुलवाया। सुनार के बेटे ने कहा, "महाराज ! इतना दही क्या होगा ? आप इस ग्वालिन को सौ-पचास (पैसे) दे दीजिए और मैं इस दही के बरतन में हाथी को डुबोकर निकाल लेता हूँ ।" अमीर ने कहा, "ठीक है ।" इसके बाद सुनार के छोटे बेटे ने दही में हाथी को डुबोकर निकाल लिया और ग्वालिन अपना दही लेकर फिर बेचने निकल पड़ी ।

सुनार के बेटे ने अमीर महाशय से कहा, "महाराज ! आपका हाथी तैयार है ।" अमीर महाशय हँस पड़े और बोले, "एक दिन तो तुम अपने पिता को सच्चे सुनार की परिभाषा बता रहे थे और शत-प्रतिशत कमाने की बात कर रहे थे ।"

सुनार के बेटे ने जोरदार ठहाका लगाया और कहा, "महाराज ! मैं अपने पिता से झूठ नहीं बोला । दही बेचनेवाली मेरी पत्नी थी और असली हाथी मेरे घर चला गया और आपको मिला सोने का पानी चढ़ा हुआ नकली हाथी । हुआ यों कि दही के बरतन में यह नकली हाथी पहले से डला हुआ था और मैंने डुबाया तो असली हाथी को लेकिन निकाला इस नकली हाथी को । समझे ।" अमीर महाशय हैरान भी थे और परेशान भी, क्योंकि उन्हें सच्चे सुनार की परिभाषा समझ में आ गई थी ।

Vocabulaire

पुराना ancien
आज aujourd'hui
कहानी-f histoire
गाँव-m village
सुनार-m orfèvre
गहना-m ornement
सच्चा vrai
असली authentique
नकली faux, contrefait
परिभाषा-f définition
आना un centième de roupie
16 आना = 1 रुपया roupie

मँझला du milieu
खुद soi même
ग्राहक-m acheteur
महाशय-m monsieur
सँझला après celui de milieu
सपना-m rêve
बारी-f tour, fois
स्वीकार करना accepter
प्रतिदिन chaque jour
देख-रेख-f soins, surveillance
भाग-m partie, portion
पीतल-m cuivre

हफ्ता-m semaine
दही-m yaourt
चमक-f lustre, éclat
ग्वालिन-f vendeuse de lait
बरतन-m récipient
डुबोना noyer, plonger
शत-प्रतिशत cent pour cent
कमाना gagner (l'argent)
ठहाका-m éclat de rire
पानी चढ़ाना plaquer, recouvrir
हैरान perplexe
परेशान tracassé, tourmenté